International Journal of Information Movement Vol.6 Issue VI (October 2021)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 1-3

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क): सफलता व असफलता का मूल्यांकन

कप्तान
एसिस्टेंट प्रोफेसर
लक्ष्मी बाई कॉलेज
दिल्ली विश्व विद्यालय
अशोक विहार–III
दिल्ली–110052
Email: jnukaptan@gmail.com

सार : वर्तमान समय में दक्षिण एशिया का क्षेत्र विश्व के लिए काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां पर 2 परमाणु शक्ति सम्पन्न देश विद्यमान जिनमें भारत व पाकिस्तान प्रमुख हैं। विश्व के काफी का घना आबादी वाला क्षेत्र जहां पर विकास व अनुसंधान की अपार सम्भावना है। परन्तु यहां आतंकवाद की भी समस्या भी बनी हुई, यहां पर है। सार्क के माध्यम से ही इस क्षेत्र का विकास कर सकते है।

1.0 भूमिका

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (The South Asian Association for Regional Cooperation SAARC) का गठन 1985 में ढाका में किया गया था। इसमें सात देश थे। बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालद्वीप, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका ये 2005 में अफगानिस्तान इसका नया सदस्य बना। सार्क मुख्य तौर पर सामाजिक–आर्थिक, ऊर्जा शिक्षा, संस्कृति, गरीबी उन्मूलन, व्यापार को बढ़ावा, ग्रामीण विकास और सुरक्षा पर काम करने के लिए अपनाया गया एक क्षेत्रीय संगठन है। अब तक इस संगठन में अनेक सफलता और अनेक असफलता प्राप्त की हुई है। इसकी सफलता इस बात पर आधारित है कि इन देशों को आर्थिक विकास की आवश्यकता है। इस कारण से ये देश आपसी सहयोग कर रहे है। पर ये विश्वास इतना गहरा नहीं है कि ये आपस में सहयोग कर सके। इस कारण से यह संगठन सफल नहीं हो पा रहा है। इसमें ओर सहयोग करने की और आवश्यकता है।

2.0 सार्क का इतिहास

सार्क बनने का पहला प्रयास 1947[1] में नई दिल्ली में एशियाई सम्बन्ध सम्मेलन से हुआ। इसके बाद अनेकों बार इस पर विचार–विमर्श किया गया परन्तु भारत और पाकिस्तान के तनाव के कारण इस पर ठीक प्रकार से निर्णय नहीं लिया जा सका। बाद में दक्षिण पूर्व एशियाई सहयोग संगठन[2] (ASEAN) की सफलता ने दक्षिण एशिया के देशों को सहयोग करने पर मजबूर कर दिया इसके निर्माण की पहले बांग्लादेश के राष्ट्रपति जियाउरह ने किया 1981 में सात देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक हुई। फिर 1983 में नई दिल्ली में सात देशों की विदेश मंत्रियों की बैठक हुई जिसमें मांच मूहूदो को स्वीकार किया गया जैसे कृषि, ग्रामीण विकास दूरसंचार, मौसम विज्ञान तथा स्वास्थ्य एवं जन संचार।

इसके बाद 7–8 दिसम्बर 1985 में बांग्लादेश की राजधानी ढ़ाका में इसका पहला सम्मेलन बुलाया गया था उस समय इससमें सात देशों ने भाग लिया था। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान और मालद्वीप।[3]

अफगानिस्तान 2005 में इसका सदस्य बना में बना अगस्त 2021 में अफगानिस्तान की सदस्यता पर पुनः विचार होने लगा क्योंकि तालिबान का अफगानिस्तान पर अधिकार जमा लेने के कारण। अब फिर इसकी महत्व पर प्रश्न चिन्ह लग गया है।

3.0 सार्क के उद्देश्य

साक के चार्टर अनुच्छेद[4] में सार्क के उद्देश्यों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है।

1) दक्षिण एशिया की जनता के कल्याण को प्रोत्साहन कारण उनके जीवन स्तर में सुधार करना।[5]
2) दक्षिण एशिया को आत्मनिर्भर बनाना।
3) दक्षिण एशिया में आर्थिक विकास, सामाजिक विकास व सांस्कृतिक विकास करना[6]
4) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आपसी सहयोग को मजबूत करना
5) विकासशील देशों के साथ सहयोग करना।
6) सदस्य देशों में आपसी सहयोग बढ़ाना एक दूसरे की समस्याओं को समझना व सहयोग करना।

4.0 सार्क की सफलता

दक्षिण एशिया के देश आपस में सहयोग कम रहा है। इसका कारण पाकिस्तान में आतंकवाद रहा परन्तु फिर भी भारत अपने स्तर पर काफी महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। दक्षिण एशियाई देशों के साथ चाहे वो राजनीतिक हो सामाजिक या धार्मिक संबंध है। या कोई आपदा का रहा हो हमेशा आपसी सहयोग की गुंजाईश रही। जैसे–

1) भारत ने अफगानिस्तान में सड़क व संसद का निर्माण करवाया।
2) 2010 में सार्क देशों के लिए भारत की राजधानी में सार्क विश्व विद्यालय खोला गया।[7]
3) पाकिस्तान में फूड बैंक एवं ऊर्जा भंडार की स्थापना की गई।
4) सार्क देशों के मध्य व्यापार को बढ़ावा देने के लिए 1995 में SAFTA (South Asian Free Trade Area) के बारे में वर्णन किया और 2005 में इस पर हस्ताक्षर किये गये। भारत ने 1 जनवरी 2006 में इसको स्वीकार कर लिया।[8]

इस प्रकार सार्क अनेक क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं। आपसी विकास के लिए जैसे बिजली, ऊर्जा, दूरसंचार दवाईया इत्यादि प्रमुख है।

सार्क 1985 से लेकर अब तक (सितम्बर 2021) तक असफल ज्यादा रहा है। इसके कारण आतंकवाद रहा है इसकी असफलता के कारण इस प्रकार से है।

1) दक्षिण एशिया में आतंकवाद अधिक बना हुआ है।
2) दक्षिण एश्यिा के देश एक जैसी वस्तुओं का उत्पादन करते है।
3) भारत व पाकिस्तान के मध्य विवाद का रहना।
4) आतंकवाद के कारण सार्क की बैठक समय–समय पर नहीं हो पाती।
5) गरीबी इन देशों में व्यापक ये देश आपस में सहयोग न करके विकसित देशों से सहयोग करते है।

5.0 मूल्यांकन

सार्क 1985 से लेकर अब तक यह सफलता का और असफलता का रहा है। इसका कारण इन देशों के शिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, आतंकवाद एक सामान्य समस्या रही है। जिसके कारण ये देश आपसी सहयोग नहीं कर पाये। ये देश आज भी अपने विकास के लिए विकसित देशों की और देख रहे

विकसित देश भी इनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहे है। जैसे चीन का नेपाल, पाकिस्तान श्रीलंका आदि। परन्तु इन देशों को दक्षिण–दक्षिण सहयोग करना चाहिए एक दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। इन देशों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए।

6.0 References

1) https://hihindi.com/%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%95-saarc-information-in-hindi/
2) https://hihindi.com/%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%95-saarc-information-in-hindi/
3) https://hihindi.com/%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%95-saarc-information-in-hindi/
4) https://www.scotbuzz.org/2019/03/SAARC.html
5) https://www.scotbuzz.org/2019/03/SAARC.html
6) https://www.scotbuzz.org/2019/03/SAARC.html
7) https://en.wikipedia.org/wiki/South_Asian_University
8) https://www.gprjournal.com/jadmin/Auther/31rvIolA2LALJouq9hkR/BX0BIUWk6n.pdf